

श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

श्री ब्रह्म संहिता



ईश्वरः परमः कृष्णः सच्चिदानन्दविग्रहः।

अनादिरादिर्गोविन्दः सर्वकारणकारणम् ॥ 1 ॥

कृष्ण, जिन्हें गोविंदा के नाम से जाना जाता है, सर्वोच्च ईश्वर हैं। उनका एक शाश्वत आनंदमय आध्यात्मिक शरीर है। वे सभी के मूल हैं। उनका कोई अन्य मूल नहीं है और वे सभी कारणों के मूल हैं।

चिन्तामणिप्रकरसद्वासु कल्पवृक्ष

लक्षावृतेषु सुरभीरभिपालयन्तम्।

लक्ष्मी सहस्रशतसम्भ्रमसेव्यमानं

गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥ 2 ॥

मैं गोविंदा की पूजा करता हूँ, जो आदिम भगवान हैं, जो गायों की देखभाल करते हैं, सभी इच्छाओं को पूरा करते हैं, आध्यात्मिक रत्नों से निर्मित धामों में विराजमान हैं, लाखों उद्देश्यपूर्ण वृक्षों से घिरे हैं, और लाखों लक्ष्मी या गोपियों द्वारा अत्यंत श्रद्धा और स्नेह से उनकी सेवा की जाती है।

वेणुं कणन्तमरविन्ददलायताक्षं

बर्हावतं समसिताम्बुदसुन्दराङ्गम्।

कन्दर्पकोटिकमनीयविशेषशोभं

गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥ 3 ॥

मैं गोविंदा की पूजा करता हूँ, जो आदिम भगवान हैं, जो अपनी बांसुरी बजाने में निपुण हैं, जिनकी आंखें कमल की पंखुड़ियों के समान खिली हुई हैं, जिनका सिर मोर के पंख से सुशोभित है, जिनका सौंदर्य नीले बादलों के रंग से रंगा हुआ है, और जिनकी अद्वितीय सुंदरता लाखों कामदेवों को मोहित करती है।

आलोलचन्द्रकलसद्वनमाल्यवंशी
रत्नागदं प्रणयकेलिकलाविलासम्।
श्यामं त्रिभंगललितं नियतप्रकाशं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥ 4 ॥

मैं गोविंदा की आराधना करता हूँ, जो आदिम भगवान हैं, जिनके गले में चंद्र-लटकन सेसुशोभित फूलों की माला है सदा प्रेम लीलाओं में लीन रहते हैं, जिनका श्यामसुंदर त्रिविध रूप शाश्वत रूप से प्रकट होता है।

अङ्गानि यस्य सकलेन्द्रियवृत्तिमन्ति
पश्यन्ति पान्ति कलयन्ति चिरं जगन्ति।
आनन्दचिन्मयसदुज्ज्वलविग्रहस्य
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥ 5 ॥

मैं गोविंदा की आराधना करता हूँ, जो आदिम भगवान हैं, जिनका दिव्य रूप आनंद, सत्य और सार से परिपूर्ण है और इस प्रकार अत्यंत तेजस्वी है। उस दिव्य आकृति के प्रत्येक अंग में समस्त इंद्रियों के पूर्ण कार्य समाहित हैं और वे शाश्वत रूप से अनंत ब्रह्मांडों, आध्यात्मिक और सांसारिक दोनों को देखते, उनका पालन-पोषण करते और प्रकट करते हैं।

अद्वैतमच्युतमनादिमनन्तरूपम्
आद्यं पुराणपुरुषं नवयौवनं च।
वेदेषु दुर्लभमदुर्लभमात्मभक्तौ
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥ 6 ॥

मैं गोविंदा की आराधना करता हूँ, जो आदिम भगवान हैं, जो वेदों में भी अगम्य हैं, परन्तु आत्मा की शुद्ध, अलंकृत भक्ति से प्राप्त किए जा सकते हैं, जो अद्वितीय हैं, जिनका क्षय नहीं होता, जिनका कोई आरंभ नहीं है, जिनका स्वरूप अनंत है, जो स्वयं आरंभ हैं और शाश्वत पुरुष हैं; फिर भी वे युवा सौंदर्य से परिपूर्ण पुरुष हैं।

पन्थास्तु कोटिशतवत्सरसम्प्रगम्यो
वायोरथापि मनसो मुनिपुङ्गवानाम्।
सोऽप्यस्ति यत्प्रपदसीम्यविचिन्त्यतत्त्वे

गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥ 7 ॥

मैं गोविंदा की आराधना करता हूँ, जो आदिम भगवान हैं, जिनके चरण कमलों के केवल शीर्ष तक ही वेयोगी पहुँच पाते हैं जो दिव्य ज्ञान की आकांक्षा रखते हैं और प्राणायाम का अभ्यास करते हैं हजारों-लाखों वर्षों से सांसारिक चीजों के निवारण द्वारा अविभेदित ब्रह्म को खोजने का प्रयास करते हैं।

एकोऽप्यसौ रचयितुं जगदण्डकोटि-

यच्छक्तिरस्ति जगदण्डचया यदन्तः।

अण्डान्तरस्थपरमाणुचयान्तरस्थं

गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥ 8 ॥

वे एक अविभेदित सत्ता हैं क्योंकि शक्ति और उसके स्वामी में कोई भेद नहीं है। लाखों लोकों की सृष्टि में उनकी शक्ति अविभाज्य रहती है। समस्त ब्रह्मांड उनमें विद्यमान हैं और वे अपने पूर्ण स्वरूप में ब्रह्मांड में बिखरे हुए प्रत्येक परमाणु में विद्यमान हैं। मैं ब्रह्मांड को एक ही समय में समाहित करता हूँ। यही वह आदिम भगवान हैं जिनकी मैं आराधना करता हूँ।

सद्भावभावितधियो मनुजास्तथैव

सम्प्राप्य रूपमहिमासनयानभूषाः।

सूक्तैर्यमेव निगमप्रथितैः स्तुवन्ति

गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥ 9 ॥

मैं उसी गोविंदा, आदिम भगवान की आराधना करता हूँ, जिनकी स्तुति में भक्तिमय मनुष्य वेदों द्वारा वर्णित मंत्र-सूक्तों का गायन करते हैं, और उचित सौंदर्य, महानता, सिंहासन, वाहन और आभूषण प्राप्त करते हैं।

आनन्दचिन्मयरसप्रतिभाविताभिस्

ताभिर्य एव निजरूपतया कलाभिः।

गोलोक एव निवसत्यखिलात्मभूतो

गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥ 10 ॥

मैं गोविंदा, आदिम भगवान की आराधना करता हूँ, जो अपने ही लोक, गोलोक में राधा के साथ निवास करते हैं, जो उनकी स्वयं की आध्यात्मिक छवि के समान हैं, चौंसठ कलात्मक गतिविधियों से परिपूर्ण परमानंदमय शक्ति का अवतार हैं, और उनकी सहेलियों [सखियों] के साथ, जो उनके शारीरिक रूप के विस्तार के अवतार हैं, उनके सदा आनंदमय आध्यात्मिक रस से परिपूर्ण और जीवंत हैं।

प्रेमाञ्जनच्छुरितभक्तिविलोचनेन
सन्तः सदैव हृदयेषु विलोकयन्ति।
यं श्यामसुन्दरमचिन्त्यगुणस्वरूपं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि॥ 11 ॥

मैं गोविंदा, आदिम भगवान की आराधना करता हूँ, जो श्यामसुंदर हैं, स्वयं कृष्ण हैं, असंख्य गुणों से परिपूर्ण हैं, जिन्हें शुद्ध भक्त प्रेम के मरहम से रंगे भक्ति के नेत्र से अपने हृदय के भीतर देखते हैं।

रामादिमूर्तिषु कलानियमेन तिष्ठन्
नानावतारमकरोद् भुवनेषु किन्तु।
कृष्णः स्वयं समभवत्परमः पुमान् यो
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि॥ 12 ॥

मैं गोविंदा की पूजा करता हूँ, जो आदिम भगवान हैं, जिन्होंने स्वयं को कृष्ण के रूप में और राम, नृसिंह, वामन आदि अवतारों के रूप में संसार में प्रकट किया, जो उनके सार तत्व हैं।

यस्य प्रभा प्रभवतो जगदण्डकोटि-
कोटिष्वशेषवसुधादि विभूतिभिन्नम्।
तद् ब्रह्म निष्कलमनंतमशेषभूतं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि॥ 13 ॥

मैं गोविंदा की पूजा करता हूँ, जो आदिम भगवान हैं, जिनकी प्रभा उपनिषदों में वर्णित अविभेदित ब्रह्म का स्रोत है, जो सांसारिक ब्रह्मांड की अनंत महिमाओं से विभेदित होकर अविभाज्य, अनंत, असीम सत्य के रूप में प्रकट होते हैं।

माया हि यस्य जगदण्डशतानि सूते
त्रैगुण्यतद्विषयवेदवितायमाना।
सत्त्वावलम्बिपरसत्त्वं विशुद्धसत्त्वं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि॥ 14 ॥

मैं गोविंदा की पूजा करता हूँ, जो आदिम भगवान हैं, जो परम सार तत्व हैं, समस्त अस्तित्व के आधार के रूप में परम सत्ता हैं, जिनकी बाह्य शक्ति त्रिविध सांसारिक गुणों, अर्थात् सत्व, रजस और तमस को समाहित करती है और सांसारिक जगत के संबंध में वैदिक ज्ञान का प्रसार करती है ।

आनन्दचिन्मयरसात्मतया मनःसु
यः प्राणिनां प्रतिफलन् स्मरतामुपेत्य ।
लीलायितेन भुवनानि जयत्यजस्रं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥ 15 ॥

मैं आदिम भगवान गोविंदा की आराधना करता हूँ, जिनकी महिमा अपने लीलाओं के द्वारा सदा इस सांसारिक जगत पर विजयपूर्वक विराजमान रहती है, और स्मरणशील आत्माओं के मन में सदा आनंदमय रस के दिव्य स्वरूप के रूप में प्रतिबिंबित होती है।

गोलोकनाम्नि निजधाम्नि तले च तस्य
देवीमहेशहरिधामसु तेषु तेषु ।
ते ते प्रभावनचया विहिताश्च येन
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥ 16 ॥

सबसे नीचा देवी-धाम [सांसारिक जगत] है, उसके ऊपर महेश-धाम [महेश का निवास] है; महेश-धाम के ऊपर हरि-धाम [हरि का निवास] है और इन सबसे ऊपर कृष्ण का अपना लोक गोलोक स्थित है। मैं आदिम भगवान गोविंदा की आराधना करता हूँ, जिन्होंने इन श्रेणीबद्ध लोकों के शासकों को उनके संबंधित अधिकार सौंपे हैं।

सृष्टिस्थितिप्रलयसाधनशक्तिरेका
छायेव यस्य भुवनानि विभर्ति दूर्गा ।
इच्छानुरूपमपि यस्य च चेष्टते सा
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥ 17 ॥

माया, जो चित शक्ति की छाया के समान है, सभी लोगों द्वारा दुर्गा के रूप में पूजी जाती है, जो इस सांसारिक जगत की सृजन, पालन और संहार करने वाली शक्ति है। मैं आराधना करता हूँ। आदिम भगवान गोविंदा, जिनकी इच्छा के अनुसार दुर्गा आचरण करती हैं।

क्षीरं यथा दधि विकारविशेषयोगात्

सञ्जायते न हि ततः पृथगस्ति हेतोः।
यः शम्भुतामपि तथा समुपैति कार्याद्
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥ 18 ॥

जिस प्रकार अम्लों की क्रिया से दूध दही में परिवर्तित हो जाता है, परन्तु दही अपने कारण, अर्थात् दूध, के समान न होता है और न ही उससे भिन्न होता है, उसी प्रकार मैं आदिम भगवान गोविंदा की आराधना करता हूँ, जिनकी शंभू अवस्था संहार के कार्य के लिए एक रूपांतरण है।

दीपार्चिरिव हि दशान्तरमभ्युपेत्य
दीपायते विवृतहेतुसमानधर्मा।
यस्तादृगेव हि च विष्णुतया विभाति
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥ 19 ॥

एक मोमबत्ती का प्रकाश अन्य मोमबत्तियों में संचारित होने पर भी, यद्यपि वह उनमें अलग-अलग जलती है, उसका गुण एक समान होता है। मैं आदिम भगवान गोविंदा की आराधना करता हूँ, जो अपने विभिन्न रूपों में समान रूप से गतिशील रूप में स्वयं को प्रकट करते हैं।

यः कारणार्णवजले भजति स्म योग-
निद्रामनन्तजगदण्डसरोमकूपः।
आधारशक्तिमवलम्ब्य परां स्वमूर्तिं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥ 20 ॥

मैं आदिम भगवान गोविंदा की आराधना करता हूँ, जो अपने महान आत्मिक रूप को धारण करते हुए, शेष नाम धारण करते हुए, सर्वव्यापी शक्ति से परिपूर्ण, और अपने जटाओं के रोमछिद्रों में संसार की अनंतता को समाहित करते हुए, कारण सागर में विश्राम करते हुए सृजनात्मक निद्रा का आनंद लेते हैं।

यस्यैकनिश्चसितकालमथावलम्ब्य
जीवन्ति लोमविलजा जगदण्डनाथाः।
विष्णुर्महान् स इह यस्य कलाविशेषो
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥ 20 ॥

ब्रह्मा और अन्य सांसारिक लोकों के स्वामी, महा-विष्णु के जटाओं से प्रकट होकर , महा-विष्णु की एक श्वास के बराबर समय तक जीवित रहते हैं। मैं आदिम भगवान गोविंदा की आराधना करता हूँ, जिनके सार स्वरूप का अंश महा-विष्णु हैं।

भास्वान् यथाश्मशकलेषु निजेषु तेजः
स्वीयं कियत्प्रकटयत्यपि तद्वदत्र।
ब्रह्मा य एष जगदण्डविधानकर्ता
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि॥ 21 ॥

मैं आदिम भगवान गोविंदा की आराधना करता हूँ, जिनसे पृथक सार स्वरूप ब्रह्मा सांसारिक जगत के नियमन के लिए अपनी शक्ति प्राप्त करते हैं, जैसे सूर्य अपने प्रकाश का कुछ अंश सूर्यकांत आदि नामों वाले सभी तेजस्वी रत्नों में प्रकट करता है।

यत्पादपल्लवयुगं विनिधाय कुम्भ
द्वन्द्वे प्रणामसमये स गणाधिराजः।
विघ्नान् विहन्तुमलमस्य जगत्रयस्य
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि॥ 22 ॥

मैं आदिम भगवान गोविंदा की आराधना करता हूँ, जिनके चरण कमलों को गणेश अपने हाथी के सिर से निकले दो टीलों पर सदा धारण करते हैं, ताकि तीनों लोकों की प्रगति के मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं को नष्ट करने के अपने कार्य के लिए शक्ति प्राप्त कर सकें।

अग्रिर्मही गगनमम्बु मरुद्दिशश्च
कालस्तथात्ममनसीति जगत्त्रयाणि।
यस्माद् भवन्ति विभवन्ति विशन्ति यं च
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि॥ 23 ॥

तीनों लोक नौ तत्वों से बने हैं, अर्थात् अग्नि, पृथ्वी, आकाश, जल, वायु, दिशा, समय, आत्मा और मन। मैं आदिम भगवान गोविंदा की आराधना करता हूँ, जिनसे ये उत्पन्न होते हैं, जिनमें ये विद्यमान होते हैं और जिनमें ये सर्वव्यापी प्रलय के समय प्रवेश करते हैं।

यच्चक्षुरेष सविता सकलग्रहाणां
राजा समस्तसुरमूर्तिरशेषतेजाः

यस्याज्ञया भ्रमति सम्भृतकालचक्रो
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥ 24 ॥

सूर्य, जो समस्त ग्रहों का राजा है, अनंत प्रकाश से परिपूर्ण है, उत्तम आत्मा का स्वरूप है, इस संसार की आँख के समान है। मैं आदिम भगवान गोविंदा की आराधना करता हूँ, जिनके आदेशानुसार सूर्य कालचक्र पर सवार होकर अपनी यात्रा करता है।

धर्मोऽथ पापनिचयः श्रुतयस्तपांसि
ब्रह्मादिकीटपतगावधयश्च जीवाः।
यद्वत्तमात्रविभवप्रकटप्रभावा
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥ 25 ॥

मैं आदिम भगवान गोविंदा की आराधना करता हूँ, जिनकी प्रदत्त शक्ति से समस्त गुणों, समस्त अवगुणों, वेदों, तपस्याओं और समस्त जीवों की प्रकट शक्तियाँ, ब्रह्मा से लेकर लघुत्तम कीट तक, विद्यमान रहती हैं।

यस्त्विन्द्रगोपमथवेन्द्रमहो स्वकर्म-
बन्धानुरूपफलभाजनमातनोति।
कर्माणि निर्दहति किन्तु च भक्तिभाजां
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥ 26 ॥

मैं आदिम भगवान गोविंदा की आराधना करता हूँ, जो भक्ति से परिपूर्ण सभी कर्मों को जड़ से जला देते हैं और कर्म के मार्ग पर चलने वाले सभी लोगों को उनके पूर्व किए गए कर्मों की श्रृंखला के अनुसार, उनके कर्मों के फलों का उचित आनंद प्रदान करते हैं, चाहे वह इंद्रगोपा नाम के नन्हे से कीड़े के मामले में हो या देवों के राजा इंद्र के मामले में।

यं क्रोधकामसहजप्रणयादिभीति
वात्सल्यमोहगुरुगौरवसेव्यभावैः।
सञ्चिन्त्य तस्य सदृशीं तनुमापुरेते
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥ 27 ॥

मैं आदिम भगवान गोविंदा की आराधना करता हूँ, जिनके ध्यान करने वाले क्रोध, प्रेम, स्वाभाविक मित्रता, भय, माता-पिता के स्नेह, मोह, श्रद्धा और स्वेच्छा से सेवा के प्रभाव में उनका ध्यान करके अपने चिंतन के स्वरूप के अनुरूप शारीरिक रूप प्राप्त करते हैं।

श्रियः कान्ताः कान्तः परमपुरुषः कल्पतरवो
द्रुमा भूमिश्चिन्तामणिगणमयी तोयममृतम्।
कथा गानं नाट्यं गमनमपि वंशी प्रियसखी
चिदानन्दं ज्योतिः परमपि तदास्वाद्यमपि च ॥ 28 ॥

स यत्र क्षीराब्धिः स्रवति सुरभीभ्यश्च सुमहान्
निमेषार्धाख्यो वाव्रजति न हि यत्रापि समयः।
भजे श्वेतद्वीपं तमहमिह गोलोकमिति यं
विदन्तस्ते सन्तः क्षितिविरलचाराः कतिपये ॥ 29 ॥

मैं उस दिव्य स्थान की पूजा करता हूँ, जिसे श्वेतद्वीप के नाम से जाना जाता है, जहाँ लक्ष्मी अपने शुद्ध आध्यात्मिक सार में प्रेममयी संगिनियों के रूप में भगवान कृष्ण की प्रेममयी सेवा करती हैं, जो उनके एकमात्र प्रेमी हैं; जहां प्रत्येक वृक्ष दिव्य उद्देश्य का वृक्ष है; जहां मिट्टी ही उद्देश्य का रत्न है, सारा जल अमृत है, प्रत्येक शब्द एक गीत है, प्रत्येक चाल एक नृत्य है, बांसुरी प्रिय सेविका है, प्रकाश दिव्य आनंद से परिपूर्ण है और सर्वोच्च आध्यात्मिक सत्ताएं सभी आनंददायक और स्वादिष्ट हैं; जहां असंख्य दूध देने वाली गायें सदा दिव्य सागरों का प्रवाह करती हैं; जहां दिव्य समय का शाश्वत अस्तित्व है, जो सदा विद्यमान है और जिसका अतीत या भविष्य नहीं है, अतः वह क्षण भर के लिए भी क्षीण होने के गुण से अछूता है। इस लोक को इस संसार में केवल कुछ ही आत्म-साक्षात्कार प्राप्त आत्माओं द्वारा गोलोक के नाम से जाना जाता है।